SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

fd'kkj ckydk e u'k d dkj.k gku okyh leL;kvk dk vè;;u

ekgEen jQhd] समाज कार्य विभाग
fj;k Bkdj] विद्यार्थी, (एम.एस.डब्ल्यू) समाज कार्य विभाग
अग्रसेन महाविद्यालय, पुरानी बस्ती, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author
ekgEen jQhd] समाज कार्य विभाग
fj;k Bkdj] विद्यार्थी,
(एम.एस.डब्ल्यू) समाज कार्य विभाग
अग्रसेन महाविद्यालय, पुरानी बस्ती,
रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत
shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 18/03/2023
Revised on : -----
Accepted on : 27/03/2023
Plagiarism : 00% on 18/03/2023

Plagiarism Checker X - Report
Originality Assessment
Overall Similarity: 0%
Date: Mar 18, 2023
Statistics: 0 words Plagiarized / 1293 Total words
Remarks: No similarity found, your document looks healthy.

'kks/k lkj

भारत में ऐसी बहुत सी समस्याएं व्याप्त है जिनका समाधान करना आवश्यक है। जब तक इन समस्याओं को समाप्त नही किया जाएगा तब तक देश को पूर्ण विकसित बनाना संभव नहीं होगा। भारत में मुख्य रूप से बेरोजगारी, बढ़ती हुई जनसंख्या, जातिगत भेदभाव, गरीबी, अपराध की बढ़ती प्रवृत्ति, अशिक्षा मुख्य समस्याओं में है इसके अलावा नशे की समस्या भी युवाओं और किशोरों को सबसे अधिक संकट में डाल रही है। जैसे–जैसे बालक किशोरावस्था में प्रवेश करता है वैसे–वैसे उसमें विभिन्न शारिरिक, मानसिक, सामाजिक और शैक्षणिक परिवर्तन देखने को मिलते हैं, इन परिवर्तनो के कारण उसे नई चीजों को सीखना और उन्हे देखना अच्छा लगने लगता है। 16 से 18 वर्ष के बालकों को किशोरावस्था में रखा गया है, किशोरों की संख्या भारत में लगभग 8 करोड़ है। इससे यह ज्ञात होता है कि भारत के विकास में किशोरों का बहुत अधिक महत्व है क्योकि यही किशोर युवावस्था में पहुंचकर भारत को विकसित बनाने में सहायता करेंगे, लेकिन किशारों के विकास में नशे का उपयोग एक बड़ी बाधा के रूप में देखने को मिल रहा है। वर्तमान समय में हमारा देश सतत् विकास की तरफ अग्रसर है, वही हमारे देश के बालकों का भविष्य खतरे में है, क्योकि इस अवस्था को समस्याओं का काल कहा जाता है। नशा हमारे समाज में तीव्र गति से अपना पैर पसार रहा है। नशे से हमारा अर्थ उस मादक द्रव्य के सेवन से है जिसे किशोर बालक अपनी जिंदगी की आवश्यकता मान बैठे हैं। नशा एक ऐसी लत है जिसके चपेट में बालक अत्यधिक बढ़ रहें हैं, उन्हे अपने अंदर की बुराईयों का पता भी नहीं चल रहा है जिससे उनकी शारिरिक, मानसिक एवं शैक्षणिक स्तर पर अत्यधिक प्रभाव पड़ रहा है। वे नशे के तौर पर ड्रग्स, शराब, गुटखा, सिगरेट, नशे की गोलियां जैसे पदार्थों का सेवन

करते हैं जिससे उन्हें मानसिक संतुष्टि की अनुभूति प्राप्त होती है। नशे का प्रयोग बालको के मानसिक, शारिरिक, शैक्षणिक तथा सामाजिक स्तर पर एक बहुत बड़ी चुनौती के रूप में सामने प्रकट हो रही है। नशीले पदार्थ जब बालको के शरीर में प्रवेश करता है तो उनके भीतर विभिन्न बदलाव होते जाते है जिसके परिणामस्वरूप वह अपराधिक प्रवृत्ति के होते जाते है। ऐसे समय में किशोरों को उचित मार्गदर्शन तथा सलाह देना अत्यधिक महत्वपूर्ण होता है।

e[; 'kCn

u'kk] lekt] 'k{kf.kd] ekufld] lkekftd] fd'kksj ckyd-

ifjp;

नशा हमारे समाज के लिए एक घातक बीमारी है जो मनुष्यों के जीवन को पूरी तरह से खोखला कर दे रहा है। नशे के कारण मनुष्य अपने घर, परिवार, शिक्षा आदि सभी से दूर होता चला जा रहा है। इसी का प्रभाव किशोर बालको पर बहुत अधिक पड़ रहा है। नशे ने हमारे देश के नौजवनों को इस तरह जकड़ लिया है जैसे एक शिकारी अपने शिकार जकड़ता है। ऐसा अनुमान लगाया जा सकता है कि भारत में कम से कम 70 लाख लोग नशे की लत से ग्रसित है इनमें किशोर बालक भी शामिल है। वे चरस, गांजे, कोकीन, ब्राउन शुगर, कफ सीरप, सोल्युशन, अल्कोहल जैसे पदार्थो से नशा करते है और अपने जीवन को जोखिमपूर्ण बना रहे है। बालकों में अलग–अलग कारणों से नशे की लत हो रही है। कुछ बच्चे तो सिर्फ दिखावा करने और अपने आप को बड़ा दिखाने के लिए नशा करते है। जो बच्चे पढ़ाई–लिखाई से दूर होते है, जिन्हे शिक्षा प्राप्त करने के लिए दूसरे शहर जाना पड़ता है वहाँ जाकर वह अकेलेपन की वजह से वह नशे की तरफ जा रहे है। नशे का एक मुख्य कारण गलत संगत में रहने की वजह से भी होता है। बालक अपने से बड़े या अपने हम उम्र के साथियों के साथ समय व्यतीत करते है और नशा करना प्रारंभ करते है, इसलिए हमें इसकी जानकारी होना आवश्यक है।

mís';

किशोर बालको के जीवन में नशे से होने वाली सामाजिक, मानसिक, शारीरिक तथा शैक्षणिक स्तर पर होने वाली समस्याओं का अध्ययन करना।

lkfgR; leh{kk

1. पेसिफिक एकेडमी ऑफ हायर एजूकेशन एंड रिसर्च यूनिवर्सिटी उदयपुर की रिपोर्ट के अनुसार नशे से बालकों के शरीर पर बहुत अधिक गहरा असर पड़ रहा है।
2. सेंटर फॉर चाईल्ड प्रोटेक्शन जयपुर की रिपोर्ट के अनुसार दिल्ली में प्रत्येक तीन में से एक बेसहारा बच्चा (स्ट्रीट चाईल्ड) नशे, अल्कोहल का आदी है।
3. बुनियादी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय चुरू राजस्थान के रिपोर्ट के मुताबिक नशे की लत विद्यार्थियों के जीवन को बर्बाद करती जा रही है इसके कारण उनके अंदर की नैतिकता भी लुप्त होती जा रही है।
4. समाजशास्त्र विभाग, नारायण कॉलेज, उत्तर प्रदेश के अनुसार बालकों को तनाव से मुक्ति तथा आनंद की अनुभूति प्राप्त करने के लिए मादक पदार्थो का सेवन करना मुख्य कारण है।
5. पंजाब यूनिवर्सिटी, चण्डीगढ़ के रिपोर्ट के अनुसार छात्र नशा अपने दोस्तों का साथ पाने के लिए करते है।

'kks/k i)fr

lo{k.k i)fr% इस पद्धति के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रो के ग्रामवासियों से किशोर बालकों के संदर्भ में जानकारी हासिल की गई तथा बालकों से उनकी समस्याओं का अध्ययन किया गया। नशे की लत से ग्रसित बालकों के माता–पिता से भी जानकारी प्राप्त किया गया।

ifjdYiuk% नशे का किशोर बालकों के सामाजिक, मानसिक, शारीरिक एवं शैक्षणिक स्तर प्रभाव पड़ता है।

vè;;u dk dk;{k=% प्रस्तुत अध्ययन रायपुर जिले के ग्रामीण क्षेत्र सिवनी में किया गया, जिसमें 50 किशोरों से प्राथमिक आंकड़े संग्रहित किया गये है।

vkdMksa dk ladyu

प्रस्तुत शोध पत्र के अध्ययन हेतु प्राथमिक आंकड़ो के संकलन के लिए 50 बालकों का चयन ग्रामीण क्षेत्र सिवनी से किया गया व द्वितीयक समंको का संकलन पुस्तके व पत्र–पत्रिकाओं से एकत्रित किया गया हैं।

vkdMksa dk fo'ys"k.k

lkfj.kh Øekd 1% नशे की लत के कारण किशोर बालकों के सामाजिक स्तर पर प्रभाव का अध्ययन

प्रभाव	आवृत्ति	प्रतिशत
कोई प्रभाव नहीं पड़ता	7	14
कम प्रभाव पड़ता है	7	14
उदासीन	6	12
अधिक प्रभाव पड़ता है	17	34
अत्यधिक प्रभाव पड़ता है	13	26
योग	50	100

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

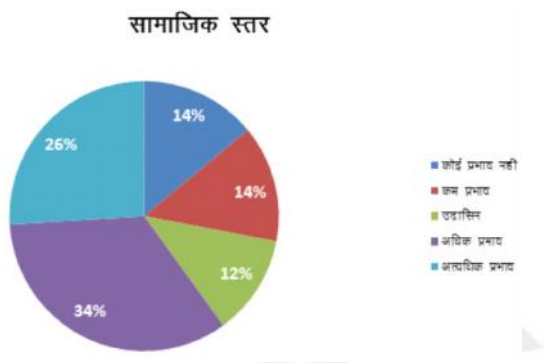

0;k[;k

सारिणी क्रमांक 01 में 50 बालको से जानकारी ली गई तो पाया गया कि नशे की लत के कारण 14 प्रतिशत किशोर बालकों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता, 14 प्रतिशत किशोर बालकों पर कम प्रभाव दिखा। 12 प्रतिशत बालकों पर प्रभाव अस्पष्ट (उदासिन) रहा, 34 प्रतिशत बालकों पर अधिक सामाजिक प्रभाव दिखा और 26 प्रतिशत बालकों पर अत्यधिक प्रभाव दिखाई पड़ा।

lkfj.kh Øekd 2% नशे की लत के कारण किशोर बालकों के शारीरिक स्तर पर प्रभाव का अध्ययन

प्रभाव	आवृत्ति	प्रतिशत
कोई प्रभाव नहीं पड़ता	2	4
कम प्रभाव पड़ता है	18	36
उदासीन	7	14
अधिक प्रभाव पड़ता है	15	30
अत्यधिक प्रभाव पड़ता है	12	24
योग	50	100

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

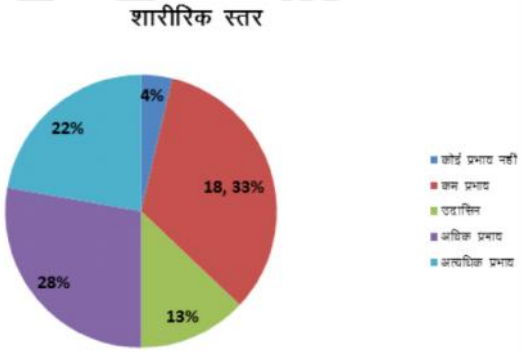

0;k[;k

सारिणी क्रमांक 02 में 50 बालको से जानकारी ली गई तो हमने यह पाया कि नशे की लत के कारण 4 प्रतिशत किशोर बालकों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता, 36 प्रतिशत किशोर बालकों पर कम प्रभाव दिखा। 14 प्रतिशत बालकों पर प्रभाव अस्पष्ट (उदासिन) रहा, 30 प्रतिशत बालकों पर अधिक सामाजिक प्रभाव दिखा और 24 प्रतिशत बालकों पर अत्यधिक प्रभाव दिखाई पड़ा।

lkfj.kh Øekd 3% नशे की लत के कारण किशोर बालकों के शैक्षणिक स्तर पर प्रभाव का अध्ययन

प्रभाव	आवृत्ति	प्रतिशत
कोई प्रभाव नहीं पड़ता	10	20
कम प्रभाव पड़ता है	10	20
उदासीन	5	10
अधिक प्रभाव पड़ता है	10	20
अत्यधिक प्रभाव पड़ता है	15	30
योग	50	100

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

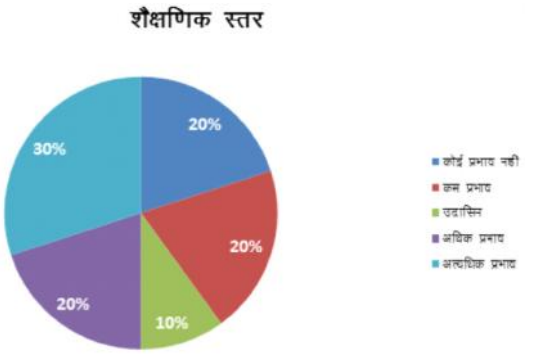

0;k[;k

सारिणी क्रमांक 03 में 50 बालको से जानकारी ली गई तो हमने यह पाया कि नशे की लत के कारण 20 प्रतिशत किशोर बालकों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा, 20 प्रतिशत किशोर बालकों पर कम प्रभाव दिखा। 10 प्रतिशत बालकों पर प्रभाव अस्पष्ट (उदासिन) रहा, 20 प्रतिशत बालकों पर अधिक सामाजिक प्रभाव दिखा और 30 प्रतिशत बालकों पर अत्यधिक प्रभाव दिखाई पड़ा।

lkfj.kh Øekd 4% नशे की लत के कारण किशोर बालकों के मानसिक स्तर पर प्रभाव का अध्ययन

प्रभाव	आवृत्ति	प्रतिशत
कोई प्रभाव नहीं पड़ता	4	8
कम प्रभाव पड़ता है	6	12
उदासीन	10	20
अधिक प्रभाव पड़ता है	15	30
अत्यधिक प्रभाव पड़ता है	15	30
योग	50	100

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

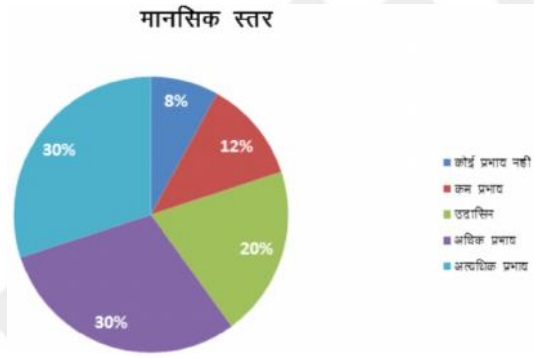

0;k[;k

सारिणी क्रमांक 03 में 50 बालको से जानकारी ली गई, तो हमने यह पाया कि नशे की लत के कारण 8 प्रतिशत किशोर बालकों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता, 12 प्रतिशत किशोर बालकों पर कम प्रभाव दिखा। 20 प्रतिशत बालकों पर प्रभाव अस्पष्ट (उदासीन) रहा, 30 प्रतिशत बालकों पर अधिक सामाजिक प्रभाव दिखा और 30 प्रतिशत बालकों पर अत्यधिक प्रभाव दिखाई पड़ा।

अतः उपरोक्त आंकड़ों के विश्लेषण के आधार पर हमारी परिकल्पना नशे का किशोर बालकों के सामाजिक, मानसिक, शारीरिक एवं शैक्षणिक स्तर प्रभाव पड़ता है, सत्य साबित होती है।

fu"d"kZ

नशे की लत समाज मे एक बड़ी समस्या है। इस समस्या का समाधान विभिन्न प्रकार से किया जा सकता है तथा आमजन को नशे के संबंध में जागरूक करके इस समस्या की भयावह स्थिति से अवगत कराया जा सकता है, ताकि वे अपने आसपास नशे से पीड़ित व्यक्ति की मदद कर सके एवं उसे नशा मुक्ति केन्द्र या पुनर्वास संस्थानों के साथ जोड़ सकें। विशेष तौर पर विद्यालयों तथा महाविद्यालयों में नशे के दुष्प्रभाव से संबंधित जानकारी प्रदान करना चाहिए तथा इसके लिए ठोस प्रावधान बनाने की आवश्यकता है, साथ ही साथ पालकों को अपने बच्चों की सभी गतिविधियों पर ध्यान केन्द्रित करने की आवश्यकता है ताकि बालक नशे की प्रवृत्ति में ना जा सकें। सरकार को भी नशे के संबंध में कड़े नियम व प्रावधान बनाने की आवश्यकता है ताकि मादक पदार्थ किशारों तक आसानी से न पहुंच सकें।

InHkj Iph

1. यशपाल, *नशे की बात है,* विप्लव प्रकाशन लखनऊ (1652)
2. अग्रवाल सुधा, *शिक्षा मनोविज्ञान,* संजय प्रकाशन (2017)
3. मैक्सिम विलियम ए, ड्रग्स एंड बिहेवियर, *पीयरसन,* 8 जुलाई (2012)

****